विद्युत दर्पण

पक्षेविसमिति की गृह पत्रिका
वर्ष 2008-2009

अंक- 8/9/10 अप्रैल 08-दिसम्बर 08

****

सम्पादकीय

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 13 जून 2008 को प.क्षे.वि.स. मुंबई कार्यालय का राजभाषा अनुपालन संबंधी निरीक्षण किया गया । राजभाषा नीति के अनुपालन हेतु कार्यालय द्वारा किए जा रहे प्रयासों पर निरीक्षण के दौरान संतोष व्यक्त किया गया । कुछ त्रुटियाँ भी बताई गईं । इस गतिविधि के चलते अनायास ही कार्यालय में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन का सिंहावलोकन आँखों के सामने आया । राजभाषा नियम 1976 के नियम 10(4) के अन्तर्गत यह कार्यालय वर्ष 1994 में अधिसूचित किया गया और तब से राजभाषा नीति अनुपालन के प्रति जागरूकता और बढ़ गई । हिन्दी के कार्य को गति देने के लिए कार्यालय में विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएँ लागू की गईं । राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित (1) हिन्दी में मूल टिप्पण आलेखन (2) हिन्दी में डिक्टेशन देना इन दो योजनाओं के साथ-साथ तकनीकी कार्य का स्वरूप और सभी कार्य में कम्प्यूटर के बढ़ते प्रयोग को ध्यान में रखते हुए कार्यालय स्तर पर विशेष 2 योजनाएँ भी लागू की गईं - (1) कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण (2) हिन्दी टिप्पण आलेखन लघु प्रोत्साहन योजना । इन योजनाओं को अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अच्छा प्रतिसाद मिलता रहा है । इसके अलावा हिन्दी सप्ताह के स्थान पर हिन्दी पखवाड़ा मनाया जाने लगा । इस अवसर पर आयोजित की जाने वाली विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं में कार्यालय के हर वर्ग से प्रतिभागी भाग लेते रहे हैं ।

कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें नियमित रूप से आयोजित की जाती हैं । नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों के साथ-साथ नराकास द्वारा आयोजित की जाने वाली विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं में इस कार्यालय से अधिकारी-कर्मचारी भाग लेते रहे हैं और पुरस्कार प्राप्त करते रहे हैं । राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा इस कार्यालय को पश्चिम क्षेत्र में स्थित केन्द्रीय कार्यालयों में राजभाषा नीति के श्रेष्ठ अनुपालन और हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य के लिए लगातार तीन वर्ष अर्थात 2003-2004, 2004-2005 एवं 2005-2006 में पुरस्कृत किया गया ।

सितम्बर 2006 से कार्यालय की गृह पत्रिका ''विद्युत दर्पण'' पुन प्रकाशित की जाने लगी इसके माध्यम से कार्मिकों में छिपी प्रतिभा काव्य, लेख आदि के माध्यम से समाने आयी ।

कार्यालय में राजभाषा नीति के अनुपालन के प्रति सजगता के कारण राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय द्वारा 'ख' क्षेत्र में स्थित कार्यालयों के लिए जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति अब कुछ ही कदमों की दूरी पर है । मुझे विश्वास है कि हमारे शामिल प्रयासों से हम यह लक्ष्य प्राप्त करके ही रहेंगे ।

(प्रवीणभाई पटेल)
सदस्य सचिव

*****

समाचार दर्पण

- श्री बी.आर. जोशी, कार्यपालक अभियंता अधिवर्षिता की आयु प्राप्ति पर दिनांक 30 जून 2008 को सरकारी सेवा से सेवा निवृत्त हुए । पक्षेविसमिति परिवार की ओर से श्री जोशी को स्वस्थ एवं आनन्दमयी सेवा निवृत्त की शुभकामनाएँ!
- श्री मनजीत सिंघ, अधीक्षण अभियंता की दिनांक 19.09.2008 को सदस्य सचिव के पद पर पदोन्नति पर उत्तर पूर्व क्षेत्रीय विद्युत समिति, शिलांग में स्थानान्तरण हुआ । पदोन्नति पर हार्दिक शुभकानाएँ!
- श्री एम.आर.सिंह, अधीक्षण अभियंता ने दिनांक 27.10.2008 को पक्षेविसमिति में कार्यभार ग्रहण किया । हार्दिक स्वागत !
- श्री लक्ष्मण गुप्ता, हिन्दी अधिकारी की दिनांक 31.12.2008 को स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति पर पक्षेविसमिति परिवार की ओर भावभीनी बिदाई दी गई । उनके स्वस्थ एवं आनन्दमयी सेवा निवृत्त की शुभकामनाएँ!

*****

हार्दिक अभिनन्दन

- श्रीमती तरूप्रभा शैल, हिन्दी अनुवादक ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति उत्तर मुंबई द्वारा दिनांक 25.09.2008 को आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। दिनांक 13.03.2009 को पुरस्कार वितरण समारोह में यह पुरस्कार प्रदान किया गया। हार्दिक अभिनन्दन !
- कार्यालय की वैबसाइट दिनांक 31.01.2009 से द्विभाषी रूप में तैयार की गई ।

****

ओजोन की सतह

दयानन्द सिंह
कार्यपालक अभियंता(वाणि.)

जमीन से बीस और तीस किलोमीटर की ऊँचाई के बीच पृथ्वी का वातारवण जिस तरह का सतह से ढंका हुआ है इसे ही ओजोन की सतह कहते हैं । कुछ किलोमीटर मोटी यह परत सारी पृथ्वी पर छाई हुई है और सभी जीवित प्रणाली का जिसमें जीवित प्राणियों, वनस्पतियाँ शामिल हैं, का बचाव सूर्य की पारा बैंगनी किरणों-प्रकाश के परावर्तन की बैंगनी पट्टी के पीछे वाली किरणों से 99 प्रतिशत से भी ज्यादा बचाव करती है । इस तरह इस सतह के अभाव में परा बैंगनी किरणों का झोंका पृथ्वी के धरातल तक आने से अनेक तरह की बिमारियों का प्रादूर्भाव हो सकता है जिसमें तरह-तरह के चर्मरोग तथा चर्म कैंसर भी हो सकता है ।

वैज्ञानिकों का मत है कि पृथ्वी की वर्तमान जलवायु का कारण ओजोन की परत ही है । इस परत के नष्ट होने से पृथ्वी पर ठीक वैसा ही असर होगा जैसा कि एक हरे भरे पौधे का हाल कृत्रिम ताप के कारण होता है । एक हरित पौधा-घर के छप्पर से सूर्य की करिणों का प्रवेश तो होता है लेकिन वह भीतर की ऊष्मा को बाहर निकालने से रोकता है । इसी प्रकार का पादप घर जैसा प्रभाव पृथ्वी पर भी पड़ेगा जिससे की ध्रुव प्रदेश की बर्फ पिघलेगी और हर जगह की जलवायु प्रभावित होगी अनेक वैज्ञानिकों का विश्वास है कि पृथ्वी पर जीवन का प्रारम्भ ओजोन की परत बनने के बाद ही हुआ है । इसलिए यह पूरी तरह जरूरी है कि ओजोन की पतली संवेदनशील परत की रक्षा की जाये । आधुनिक वैज्ञानिक अविष्कार खतरनाक रसायनों को वातावरण में फैलाने के लिए उत्तरदायी हैं जिनसे कि ओजोन की परत का निचला भाग नष्ट हो रहा है ।

आज ज्यादा से ज्यादा लोग अपनी व्यापार, पर्यटन तथा दूसरी जरूरतों के चलते एक से दूसरी जगह जाना चाहते हैं । इसके लिए वे तीव्र से तीव्र वाहनों का प्रयोग करते हैं । इसमें सुपरसोनीक वायुयान जो कि ध्वनि से भी अधिक गति से चलता है, द्वारा यातायात ऊपरी वातावरण के प्रदूषण का एक माध्यम है । इन वायुयानों के जेट से निकले धुएँ में नाइट्रोजन ऑक्साइड विशेषकर नाइट्रिक ऑक्साइड होता है जो कि ओजोन के पर्दे को नुकसान पहुँचाते हैं ।

जब जापान की हीरोशिमा और नागासाकी जैसे नगरों को नष्ट कर देने वाले अणु बमों के विस्फोट होंगे तब बड़ी मात्रा में नाइट्रोजन ऑक्साइड पैदा होंगे । ये ऊपरी वातावरण में फैलकर ओजोन की परत तक भी पहुँच सकते हैं । इससे ओजोन की परत पर पहुँचने वाले खतरे को और बढ़ाया ही जा सकता है तथा इससे खतरा बढ़ने की आशंका और बढ़ सकती है ।

ओजोन की मुलायम सतह को एक और खतरा तरह-तरह के रसायनों से जैसे हेयर डाई और सुगंध का छिड़काव, कीटनाशकों का प्रयोग करने वाले रसायनों आदि से होता है । हमारे वैज्ञानिकों को आगामी कुछ दशकों में पृथ्वी पर प्राणियों की सुरक्षा की चिंता होने लगी है । कुछ संकुचित प्रवृत्ति के व्यावसायिक मनोवृत्ति के स्वार्थी लोग ओजोन नष्ट करने वाले रसायनों के उपयोग से निर्मित वस्तुओं के उत्पादन पर रोक का विरोध कर रहे हैं । इसके अनेक प्रभाव जैसे कि कैंसर केसों में वृद्धि, स्पष्ट रूप से उजागर होने लगी है । कहा तो यह भी जा रहा है कि ओजोन की सतह में कहीं-कहीं छेद भी होने की स्थिति तक भी आ गई है । अगर समय रहते हम सावधान नहीं हुए तो बहुत ही दु:खदायक स्थिति आ सकती है । अभी-अभी ग्लोबल वार्मिंग जैसे जागरूकता देखने में आयी है लेकिन यह जागरूकता सिर्फ प्रतिकात्मक ही है । जब तक हम इस दिशा में ठोस कदम नहीं उठायेंगे तब तक इसका निदान नहीं हो पायेगा । हमें वह उपाय जोर-शोर से करने पड़ेंगे जो कि इस कठिनाई का सामना करने के लिए उपयुक्त है ।

****

वर्षा जल संरक्षण: बारिश के पानी की खेती

सुरेश द. टाकसांडे,
अधीक्षण अभियंता (रक्षण एवं सेवाएँ)

बारिश के पानी से खेती तो आपने सुनी होगी लेकिन बारिश के पानी की खेती क्या आपने सुनी है ? सदियों से गावों में इसे अपनाने की प्रथा थी । लेकिन उससे ये नामकरण नहीं हुआ था । सदियों पूर्व सिंधु घाटी की सभ्यता से पानी का व्यवस्थापन पाया गया । सभी प्रजातियाँ, संस्कृतियाँ पानी की उपलब्धि हैं, जैसे नदियों के किनारे पर ही मानव बस्तियाँ सुगम हुई और बारिश के बाद नदियाँ सूख जाती थीं, तभी जीवन की जरूरत के लिए बारिश का पानी रोककर उसे सालभर उपयोग में लाने की प्रथा बनी । फिर शहरीकरण हो गया । पूरे साल के 8760 घंटे में मुंबई जैसे शहर में करीबन 200 घंटे ही बारिश होती है और बारिश खत्म होते ही जल गटर लाईन से बहकर समुद्र में बह जाता है । शहरों में सीमेंट कांक्रीटकरण की वजह से पानी को जमीन में समाने का मौका नहीं मिलता और शुद्ध पानी चंद मिनटों में गटर में समा जाता है । इससे बाढ़ भी आती है नुकसान होता है और जमीन में पानी का स्तर भी नहीं बढ़ता है । इसी समस्या को सुलझाने हेतु बारिश के पानी का व्यवस्थापन है, जो रेन वाटर हार्वेस्टिंग के नाम से जाना जाता है ।

रेन वाटर हार्वेस्टिंग में छत से आने वाला पानी जो शुद्ध होता है उसे अन्य पानी से मिलने के पहले ही सेपरेट ड्रैनेज सिस्टम से अंडर ग्राऊंड टैंक में जमा किया जाता है । यह पानी शुद्ध होने की वजह से घर के कार्यों के वास्ते, पेड़ पौधे को सींचने, कपड़े धोने, जानवरों को पिलाने और अन्य जरूरतें पूरी करने में काम आ सकता है। इसमें मुंबई जैसे बड़े महानगर पालिका में आने वाला पानी का भार कम किया जा सकता है । सतह के जल स्तर में भी बढ़ोत्तरी होगी । अगर मुंबईवासी अपनी सोसाइटी में यह विधि अपनायें तो आप सोंच सकते हैं इसका क्या लाभ होगा । इसकी लागत एक बार ही आएगी साथ ही रखरखाव के लिए बहुत ही कम लागत लगेगी । मुंबई महानगरपालिका नये आने वाले हाऊसिंग सोसाइटियों को अण्डर वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम बनाना अनिवार्य करने वाली है । इससे आने वाली बढ़ती आबादी में कम से कम पानी की समस्या तो नहीं रहेगी ऐसे छोटे-छोटे उपाय करने से ही जलाभाव की समस्या का समाधान हो सकता है और आदमी तथा अन्य प्राणियों का जीवन आसान और सुखकर हो सकता है । आओ हम सब मिलकर इसे अपनी जरूरत समझकर इसे अपनाने का भरपूर प्रयास करें ।

****

कागज रहित कार्यालय

मोरेश्वर धकाते,
कार्यपालक अभियंता

एक जमाना था जब किसी कार्यालय, स्कूल या संस्था का कार्य कागज के बिना चलना असंभव था । यह स्थिति कोई बहुत पुरानी नहीं बल्कि हाल ही तक चलती आ रही है । आज के जीवन काल में कोई भी दफ्तर, स्कूल या कोई कम्पनी का काम-काज कागज के बिना चल सकता है, इसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते । दफ्तर में रोजमर्रा के काम-काज के लिए कागज बहुत जरूरी है । लेकिन यह सभी जानते हैं कि कागज पेड़ के तने से बनता है जिसके लिए कई पेड़ काटे जाते हैं । इससे पर्यावरण को बहुत नुकसान पहुँचता है ।

कागज की बचत अथवा बिना कागज के दफ्तर का कामकाज चलाने का अभियान बहुत सालों पहले से चलाया जा रहा है । ज्यादातर सार्वजनिक एवं निजी कंपनियाँ इस प्रयोग में शामिल होकर अलग-अलग तरीके से कागज को बचाने का प्रयास कर रहे हैं ।

आवाज रिकार्डिंग की सुविधा उपलब्ध कर कई कंपनियाँ केवल फोन पर बात कर एक दूसरे को जरूरी आदेश देती हैं । इस वजह से अर्न्त- विभागीय एवं अलग-अलग कंपनियों के आपसी काम बिना हस्ताक्षर, बिना कागज के सफलतापूर्वक हो जाते हैं । ई-मेल, एसएमएस आदि से जरूरी जानकारी एक जगह से दूसरी जगह भेजी जाती है जिससे समय और लागत की बचत होती है और रिकार्ड भी उपलब्ध रहते हैं । ज्यादातर कंपनियों ने अपनी अपनी वेबसाइट बना रखी है जिस पर सारी जानकारी /आदेश / पॉलिसी आदि हर समय उपलब्ध रहती है और नई जानकारी यदि कोई हो चुटकियों में उपलब्ध कराई जा सकती है । यह सभी जानकारी कम्प्यूटर माऊस के मात्र एक बटन क्लिक करने पर उपलब्ध हो जाती है जिससे हमें उसे प्रिंट करने की जरूरत नहीं होती है । इसकी कॉपी हम अपने कम्प्यूटर, सीडी, पेन ड्राइव इत्यादि में भी बचाकर रख सकते हैं । इस वजह से हमें हार्ड कॉपी (प्रिंटेड) रखने की जरूरत नहीं होती और काफी कागज की बचत हो जाती है । यह एक तेज, कारगर और हर समय उपलब्ध रहने वाला तरीका है जिसका इस्तेमाल कहीं भी, कभी भी कर सकते हैं ।

बिजली कम्पनी, टेलीफोन कम्पनी, मोबाइल कम्पनी, बैंकों ने भी ई-पे, बिल-पे इत्यादि सुविधाएं उपलब्ध कराकर पास बुक, बिल आदि भौतिक रूप में ग्राहक को भेजने की जरूरत को खत्म कर दिया है और इस कारण इससे संलग्न लागत कम कर दी है एवं इसका डिस्काउंट ग्राहक को दिया है । इन सभी बिल भेजने वाली कंपनियों के भारत भर में काफी ग्राहक हैं। इससे काफी कागज बच जाता है एवं पोस्टेज की कीमत भी बच जाती है । प्रीपेड बिलिंग आजकल चल रहा एक बहुत प्रभावी माध्यम है जिसमें कागज पर बिल जैसी कोई चीज नहीं होती। यह एक प्रभावी, सरल एवं सुरक्षित तरीका है । कंपनियाँ इन बिलों के ग्राहक के ई-मेल पर भेजने एवं उनकी अपनी वेबसाइट पर उपलब्ध होने की जानकारी ग्राहक को समय-समय पर एसएमएस अथवा ई-मेल अथवा फोन पर देते रहती हैं । ग्राहक सूचना केन्द्र तो हर समय कार्यरत रहते हैं जिससे इस योजना में चार-चाँद लग गए हैं ।

अभी सारे शासकीय कार्यालय, स्कूल इत्यादि को जरूरी है कि यह निजी कंपनियों द्वारा कागज बचाने की इस मुहिम की शुरूआत करें । सारे शासकीय कामकाजों में जरूरत से ज्यादा कागज इस्तेमाल होता है । इस मुहिम की सफलता शासकीय कार्यालय एवं इन कार्यालयों में काम कर रहे अफसर एवं अन्य कर्मचारियों पर निर्भर है । यह काम थोड़ा मुश्किल है लेकिन कार्य पद्धिति अथवा काम करने के तरीके में बदलाव लाने एवं सरकार द्वारा, ऐसा ज्ञापन प्रकाशित किया जाए तो कागज बचाना कोई मुश्किल कार्य नहीं रह जाएगा । इससे पर्यावरण को संतुलित रखना संभव हो पाएगा ।

''कागज का कम इस्तेमाल करें । पेड़ बचाएँ । पर्यावरण बचाएँ । ''

****

प्यार

अनिल सागरे
पति -श्रीमती छाया सागरे

करो प्यार जिंदगी से
करो प्यार मौत से
करो प्यार खुशियों से
करो प्यार दुखों से ।

करो प्यार दुनिया से
करो प्यार बच्चों से
रंगबिरंगी खिलने वाले
मासूम से फूलों से ।

करो प्यार रिश्तों से
साथ निभाते साथी से
करो प्यार पशु पंछियों से
जान से प्यारे दोस्तों से ।

करो प्यार प्रकृति से
जीवनदायिनी नदियों से
निराशा से प्रगति की ओर
उड़ने वाले मन से

पर, प्यार हो ज्योतिर्मय
मध्यम-मध्यम रोशनी भरा
खुद जलते-जलते
औरों को खुशी देने वाला ।

*****

हिन्दी पखवाड़ा 2008 का संक्षिप्त विवरण

पक्षेविसमिति, मुंबई में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन 15 सितम्बर 2008 से 29 सितम्बर 2008 तक किया गया । पखवाड़े का उद्घाटन 15 सितम्बर 2008 को किया गया । इस अवसर पर सदस्य सचिव महोदय ने सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग के महत्व और पक्षेविसमिति में इसकी उत्तरोत्तर प्रगति की संभावनाओं पर प्रकाश डाला और सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से हिन्दी पखवाड़े की प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लेने का आह्वान किया ।

पिछले कुछ वर्षों की भांति इस वर्ष भी प्रतियोगिताओं की योजना इस प्रकार की गई थी कि सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों के साथ चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी भी भाग ले सकें । हिन्दी पखवाड़े में कुल 12 प्रतियोगितायें आयोजित की गईं:

हिन्दी पखवाड़े की कुल 12 प्रतियोगितामें 27 अधिकारियों / कर्मचारियों की 96 प्रविष्टियाँ प्राप्त हुईं अर्थात कुछ अधिकारियों / कर्मचारियों ने एकाधिक प्रतियोगितामें भाग लिया ।

दिनांक 10.11.2008 को सायं 3.30 बजे कार्यालय के सभागार में पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया । इस अवसर पर अधिकारियों / कर्मचारियों ने गीत, कविता आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए । सदस्य सचिव के कर कमलों द्वारा विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र वितरित किए गए। कार्यक्रम का मंच संचालन सुश्री तरूप्रभा शैल, हिन्दी अनुवादक ने बहुत ही सुरूचिपूर्ण और व्यवस्थित ढंग से किया ।

हिन्दी पखवाड़ा 2008के विजेताओं की सूची

कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण-

प्रथम- श्री विजय मूडि, निजि सचिव
द्वितीय- श्रीमती ऋता राणे, उ.श्रे.लि.
तृतीय- श्रीमती अदिति पालकर, अ.श्रे.लि.

हिन्दी वाचन-

प्रथम- श्रीमती शोभना पणिकर, आशुलिपिक
द्वितीय- श्रीमती ऋता राणे, उ. श्रे.लि.
तृतीय- श्रीमती छाया अ. सागरे, अ.श्रे.लि.

हिन्दी भाषण- (क + ख वर्ग)

प्रथम- श्री सु.द. टाकसांडे, अधी.अभि.
द्वितीय- श्री लक्ष्मी कांत सिंह राठौर, सहा.निदे.
तृतीय- श्री खीरूराम राय, सहा.निदे.

हिन्दी भाषण- (ग वर्ग)

प्रथम- श्री विजय मूडि, निजी सचिव
द्वितीय- श्री अनिल थॉमस, सहा.निदे.
तृतीय- श्री सुकुमार हानरा, सहा.अभि.

हिन्दी श्रुतलेख-

प्रथम- श्रीमती सुमेधा राजाध्यक्ष, अ.श्रे.लि.
द्वितीय- श्रीमती आरती अ. देशमुख, अ.श्रे.लि.
तृतीय- श्रीमती अदिति अ. पालकर, अ.श्रे.लि.

हिन्दी निबंध- (क+ख वर्ग)-

प्रथम- श्रीमती अदिति अ. पालकर, अ.श्रे.लि.
द्वितीय- श्री शिवकुमार हरिद्वाज, आशुलिपिक
तृतीय- श्री प्रमोद लोणे, सहा.निदे.

हिन्दी निबंध (ग वर्ग)-

प्रथम- श्री विजय मूडि, निजि सचिव
द्वितीय- शोभना पणिकर, आशुलिपिक
तृतीय- श्रीमती मुनीरा शेख , अ.श्रे.लि.

हिन्दी टिप्पण-आलेखन

प्रथम- श्री शिवकुमार हरिद्वाज, आशुलिपिक
द्वितीय- श्रीमती छाया सागरे, अ.श्रे.लि.
तृतीय- श्रीमती कुलदीप कौर, प्रधान लिपिक

हिन्दी वाचन -(चतुर्थ श्रेणी)

प्रथम- श्री आर.एन. भोरकड़े, सफाई वाला
द्वितीय- श्री एम.बी. शेलार, दफ्तरी
तृतीय- श्री एम.डी.सावंत, चपरासी

हिन्दी में आवेदन लिखना- (चतुर्थ श्रेणी)

प्रथम- श्री आर.एन. भोरकड़े, सफाई वाला
द्वितीय- श्री एम.बी. शेलार, दफ्तरी
तृतीय- श्री बी.एन. जाधव, मददगार

हिन्दी व्यवहार- (हस्तलिखित)

प्रथम- श्री रमेश प्रभुगांवकर, उ.श्रे.लि.
द्वितीय- श्रीमती सुमेधा राजाध्यक्ष, अ.श्रे.लि.
तृतीय- श्रीमती शुभांगी कोल्हे, उ.श्रे.लि.

हिन्दी व्यवहार (कम्प्यूटर पर)

प्रथम- श्री रमेश प्रभुगांवकर, उ.श्रे.लि.
द्वितीय- श्रीमती अदिति अ. पालकर, अ.श्रे.लि.
तृतीय- श्री खीरूराम राय, सहा.निदे.

प्रोत्साहन पुरस्कार

श्री शेष कुमार सावंत, उ.श्रे.लि.
श्रीमती नन्दिनी उन्नीकृष्णन्, अ.श्रे.लि.
श्री आर.एस. मोरे, वाहन चालक
श्रीमती सुनन्दा गायकवाड़, चपरासी
श्री बी.एन. जाधव, मददगार
श्रीमती हेमलता सावंत, सफाई कर्मचारी

*****

राजभाषा समाचार

- संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 13 जून 2008 को प.क्षे.वि.स. मुंबई कार्यालय का राजभाषा अनुपालन संबंधी निरीक्षण किया गया ।
- राष्ट्रीय विद्युत प्रशिक्षण प्रतिष्ठान फरीदाबाद द्वारा पक्षेविसमिति, मुंबई में दिनांक 13.10.2008 से 17.10.2008 तक हिन्दी कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया ।
- ''संसदीय राजभाषा समिति- निरीक्षण एवं अनुवर्ती कार्रवाई'' विषय पर दिनांक 19.02.2009 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में श्रीमती तरूप्रभा शैल, हिन्दी अनुवादक ने व्याख्यान दिया ।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति उत्तर मुंबई द्वारा दिनांक 16 दिसम्बर 2008 को आयोजित एक दिवसीय विशेष कार्यशाला में श्री शिवकुमार हरिद्वाज, आशुलिपिक ने भाग लिया ।

****

रू ख स त

शेष कुमार सावंत,
उच्च श्रेणी लिपिक

बूढ़ा- (अस्थमा ग्रस्त बीमार) क्या करूं ? आ sss, ऊ ssss
बेटी- (पानी का ग्लास बढ़ाते हुए) बापू पानी लो ।
बूढ़ा- नहीं---- नहीं---- दे दो ---------(पानी पीता है)
बेटी मुंह में पानी डालती है, बूढ़े को जोर से हिचकी आती है ।
बेटी- (डर के मारे) माँ----, भैया---- (पुकारती हुई अंदर जाती है)।
(बूढ़े के प्राण निकल जाते हैं । ठीक उसी वक्त शरीर से आत्मा बाहर निकलती है । कमरे में ईधर-ऊधर दौड़ती है जैसे कमरे से बाहर निकलने का रास्ता ढूंढ रही है)।
आत्मा- (दौड़ते-दौड़ते अचानक नज़र अपने मृत शरीर पर जाती है) ये मैं ----- और ये -----(करीब जाकर) मतलब---------(किसी के आने की आवाज सुनता है, ईधर-ऊधर देखता है बूढ़े की पत्नी, बेटा और बेटी दौड़ते आते हैं । आत्मा छुपने की कोशिश करती है । बेटी को कुछ याद आता है । वह अंदर भागती है । बीच में छुपी हुई आत्मा को पार कर जाती है)।
आत्मा- (देखता रहता है कि यह क्या हुआ । फिर से तुरंत बेटी हाथ में दवाई की शीशी पकड़कर बीच में खड़ी आत्मा को पार कर माँ के पास पहुँचती है । आत्मा हैरत में पड़ जाती है । उसे मालूम होता है कि कोई उसे देख या छू नहीं सकता)।
माँ- जा बेटा डॉक्टर को जल्दी बुला ।
बेटा- हाँ मां (बाहर जाता है).
आत्मा- क्यों ? डॉक्टर क्यों चाहिए ? पता नहीं । (घर में ईधर ऊधर भटकती है इतने में बेटा डॉक्टर को लेकर आता है । डॉक्टर जाँच करता है).
डॉक्टर- ये अब इस दुनिया में नहीं रहे ।
आत्मा- मतलब ----- मैं नहीं, ये ------- मौत हो गई । इस शरीर से अब ----------मेरा रिश्ता ?
(पड़ोसी बूढ़े को जमीन पर दरी बिछाकर लिटाते हैं । माँ, बेटी एक कोने में रोती हुई नज़र आती हैं । कुछ लोग बूढ़े के आसपास बैठते हैं । आत्मा दरवाजे से बाहर चली जाती है)।

दृश्य -2
(दिन का समय । पड़ौस के लोग जमा होने लगते हैं । आत्मा दरवाजे से बाहर निकलती है । बेटा और डॉक्टर बाहर आकर बातें करते रहते हैं । आत्मा सामने जो पेड़ है उस पर जा बैठी है)।
आत्मा- आ- हा- हा ---------- कितना सुखद क्षण है ये ! सुंदर । अति सुंदर । यातना विरहित । वाह-वाह - आनन्द ही आनन्द ------ कितना हल्का-हल्का महसूस कर रहा हूँ । आजाद पंछी की तरह । मृत्यु ! मानव जीवन की सुखद घटना, पर जिन्दगी भर मनुष्य इसकी सुंदरता से अंजान क्यों है ? मृत्यु से डरकर क्यों जीता है ? मैं किन शब्दों में इस आनन्द का वर्णन करूं । कोई दुख नहीं, कोई तकलीफ नहीं, न उदासी है न गम आ- हा- हा । लेकिन कल तक ------- (बेटे पर नज़र जाती है, गुस्सा आता है)।

दृश्य-3, फ्लैश बैक (रात्रि का समय)

बूढ़ा- (अस्थमा का अटैक आता है । वेदना से पीड़ित अस्वस्थ है । पत्नी और बेटी सेवा कर रही है) । तुम्हारा लाड़ला कहाँ है ?
पत्नी- (नाराज) होगा ईधर-ऊधर ।
बेटी- भैया को तो घर की फिक्र ही नहीं ।
बूढ़ा- यहाँ मेंरी जान निकल रही है और --------- (खाँसता है)।
पत्नी- आप शांत हो जाओ । सब ठीक हो जायेगा ।
बूढ़ा- क्या खाक ठीक हो जायेगा ?
पत्नी- (बेटी को) तू फोन करके देख (बेटी उठकर फोन लगाती है)
बेटी- स्विच ऑफ करके रखा है ।
पत्नी- तू जा जरा पानी गरम कर । डॉक्टर का भी पता नहीं । (इतने में डॉक्टर आता है)।
डॉक्टर- कैसे हो चाचा ?
बूढ़ा- घबराहट-सी होने लगी है ।
डॉक्टर- डरना नहीं सब ठीक हो जायेगा । इंजैक्शन देता हूँ । बेटा नज़र नहीं आता ? (डॉक्टर इंजैक्शन लगाता है)। नींद आयेगी चाचा, चिंता मत करना (जाने लगता है)।
माँ- डॉक्टर, आप कुछ दवाई लिखकर देने वाले थे ?
डॉक्टर- नहीं, आज नहीं कल देखते हैं । (डॉक्टर जाता है)।
बूढ़ा- रोज आता है सुला के जाता है । (माँ-बेटी ईधर-ऊधर कुछ करने लगती हैं । आहिस्ता-आहिस्ता बूढ़े को नींद आने लगती है । बूढ़ा सो जाता है । नीचे दरी पर माँ-बेटी बैठे-बैठे सो जाती हैं)।
(एक घंटे बाद बेटा घर में प्रवेश करता है । देखता है माँ, बाप बहिन सोये हैं । अपने बापू के पास जाता है उनका सिर आहिस्ता से अपनी गोदी में लेता है । कुछ देर बाद बूढ़े की आँख खुलती है ऐसा बेटे को लगा, तब बेटा बूढ़े का सिर उठाकर तकिये पर रखकर अंदर चला जाता है)।

दृश्य -4(दिन का समय-पेड़ पर आत्मा)

आत्मा- (कभी इस डाली से उस डाली पर) आस्थमा क्या बीमारी थी, खोखला शरीर त्याग करने के बाद अब मैं आजाद हो गया हूँ । वैसे, अगर ये बीमारी नहीं होती तो मुझे क्या कमी थी ? सब कुछ तो था मेरे पास । पर इस बीमारी ने मुझे रिश्ते नाते का सही मतलब समझाया । कौन अपना, कौन पराया । मेरा बेटा शुरू-शुरू में जब मैं बीमार हुआ तब से साल-डेढ़ साल तक -------

दृश्य -5, फ्लैश बैक

(बेटा, बीमार बाप की सेवा कर रहा है। दवा पिला रहा है, जरा-सी खांसी होने पर घबरा जाता है । पैर दबाना, चाय पिलाना, फल काटकर खिलाना । बड़े अस्पताल से दिखाकर आना वगैरह-वगैरह)।

दृश्य -6, फ्लैश बैक

(आज बीमार बाप थोड़ा स्वस्थ है । चाय/सूप पी रहा है । इतने में बेटा आता है)।
बेटा - बापू आज मैं बदलापुर गया था ।
बापू- क्यो ?
माँ- आपके लिए दवाई लानी होगी ।
बेटा- नहीं माँ । वहाँ एक बाबा है । किसी ने उनके बारे में कहा था तो मैं उनको मिलने गया । उन्हें कहा मेरे बापू डेढ़ साल से बीमार हैं । काफी दवा की पर असर बिल्कुल नहीं । तो उन्होंने ये (विभूती माथे को लगाता है) फल का प्रसाद दिया है ।
बूढ़ा- लेकिन तू तो इन बातों पर विश्वास नहीं करता ? और अब ----
बेटा- क्या करूं ?जैसे तैसे आप ठीक हो जायें---तो---- और हाँ बापू डॉ. रंगमूर्ति से मिला उन्होंने ये दवाई दी है और कहा अमरीका के बड़े डॉक्टर आने वाले हैं हम तुम्हारे बापू को उनको दिखायेंगे ।
माँ- मेरा प्यारा लाडला । चल अब, रात हो गई, खाना खा ।
बूढ़ा- आज काम पर नहीं गया ?
बेटा- नहीं बापू ईधर-ऊधर आने में ही पूरा वक्त चले गया और मैं ---
------(बोलते-बोलते दवाई पिलाई, कम्बल ठीक किया)।

दृश्य -7, फ्लैश बैक(आत्मा पेड़ पर)

आत्मा- जैसे जैसे बीमारी बढ़ती गई । रोज-रोज वही दु:ख, दर्द, वेदना, तड़प । वही अच्छा बेटा पिछले पाँच-छ: महीनों से-----

दृश्य -8, फ्लैश बैक(बूढ़ा, माँ, बेटी सब बेटे की राह देख रहे हैं)।

बूढ़ा- (बेटा आता है) बहुत रात हो गई । कहाँ था ?
माँ- आप ही पूछो । दवाई लाने गया होगा ।
बेटी- भैया, बोलता क्यों नहीं ?
माँ- क्या बोलेगा ? चार-पाँच दिनों से देख रही हूँ एकदम से बदल गया है । न बाप की ओर देखता है न उनकी पूछ-ताछ करता है । जरा-जरा सी बात पर (इंटरकट- बेटा: (किचन में माँ से चिल्लाकर गुस्से से)मुझे नहीं मालूम----- मैं क्या करूँ) और आजकल तो ----
- (माँ बोलती रहती है बोलती रहती है बेटा दूर खड़ा बोप को तिरछी नज़र से देखता रहता है । दरवाजा खोलकर बाहर निकल जाता है)।
माँ- देखा ?
बूढ़ा- कुछ मत कहो । अपनी बेबसी और लाचारी मुझसे सही नहीं जाती । उस दिन बड़े अस्पताल में ले गया । बड़े-बड़े डॉक्टर और अस्पताल देखकर मैं खुश हो गया । सोचा अब मेरा बेटा मेरा सही इलाज करवायेगा । डॉक्टर आये, उन्होंने चेक किया और ये डॉक्टर के साथ चला गया । बहुत देर बाद आया (हाँफता है)।
बेटी- अब आराम कीजिए ।
बूढ़ा- मुझे कहा । चलो । घर जायेंगे । मैंने पूछा हुआ क्या ? बार-बार पूछने पर भी उसने मुंह बंद रखा और तब से ------
माँ- कहीं से कर्जा ले सकता है । आहिस्ता-आहिस्ता निकल जाता ।
बूढ़ा- मुझे -----डेढ़ दो साल से बीमारी---- मैं-----मुझे ठीक होना है --मुझे ---(हाँफता रहता है)

दृश्य -9, फ्लैश बैक(आत्मा पेड़ पर)

आत्मा- और आहिस्ता-आहिस्ता सारे इजाल बंद हो गये (बेटा अब भी डॉक्टर से बात कर रहा है । बेटे को देखकर उसे गुस्सा आता है । जैसे ही बेटा घर की ओर चलने लगता है । पेढ़ से उतरकर उसके पीछे-पीछे घर में दाखिल होती है) ।

दृश्य-10(बेटे के साथ आत्मा घर में प्रवेश करती है)

बेटा- (पिता के मृत शरीर को लिपटकर रोने लगता है । बेटी और माँ को लगता है ये नाटक कर रहा है)।
माँ- (रोने लगती है । रोते-रोते अपने आप में) अब रोता है । तब सोया था । (रोती रहती है, बेटी उससे लिपटकर रोती है)।
आत्मा- (पत्नी के करीब आत्मा जाती है) मैं ठीक हूँ । मुझे अब कोई दवा या डॉक्टर की जरूरत नहीं है । देखो अब मैं घूम-फिर सकता है । मेरी सारी बीमारियाँ खत्म हो गईं । लेकिन बेटे ने जो किया उसे मैं माफ नहीं करूंगा । उसने मेरा इलाज बंद करवाया । मैं अपने बेटे से नाराज हूँ । पर अब मैं बिल्कुल ठीक हूँ, मुझ पर यकीन करो । (पत्नी रोती जा रही है । बेटे को देखकर)। अपनी माँ को रूलाया ये अच्छा नहीं है ।
(माँ और बेटी मृत शरीर के पास जाती हैं, आत्मा उनके पीछे-पीछे जाती है) ।
बेटा- (रोता रहता है)।
आत्मा- (बेटे से) तूने माँ को रूलाया, देख उसकी हालत क्या है ?
बेटा- (माँ से). माँ कैसे बताऊँ ? (रोता रहता है)
माँ- (बेटे की तरफ ऐसे देखती है जैसे अब बेटा कोई बहाना बनायेगा) ।
बेटा-(रोते-रोते) माँ मेरे बापू । मेरे प्राण प्रिय बापू चले गये । मैं बदनसीब बेटा उनकी मौत देखता रहा । एक-दो महीने नहीं पिछले 6 महिनों से । अनचाही । जिसे मैं किसी भी हालत में रोक नहीं सकता था । मैं दिल पर पत्थर रख कर उनके मौत की प्रतीक्षा कर रहा था । उनकी हालत मुझसे देखी नहीं जा रही थी । बड़े डॉक्टर ने जब कहा कि वे लास्ट स्टेज़ पर हैं, 15-20 दिन भी उनके पास नहीं हैं । इलाज का कोई फायदा नहीं । उन्हें अपने परिवार में ले जा । उन्हें कैंसर है । बचने की कोई उम्मीद नहीं है और ये बात मैंने तुम सबसे छुपाई (रोता रहता है)।
(माँ, बहिन और आत्मा को महसूस होता है कि वे गलत सोचते थे)।
आत्मा- (शर्म से) बेटा मुझे माफ कर । मुझे कैंसर जैसी जान लेवा बीमारी थी ये बात अगर तुमने पहले ही बताई होती तो मैं छ: महीने क्या छ: दिन भी नहीं जी पाता । मुझे माफ कर दे । (आत्मा चली जाती है) ।

नैनं छिदंती शस्त्रानी
नैनं दहती पावक:।

****